विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय सी० सी० ए० **दिनांक 11 सितंबर 2020**

वर्ग सप्तम **शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय**

प्यारे बच्चों !

सुप्रभातम्।

आज मैं सी० सी० ए० के अंतर्गत 'मुंडकोपनिषद' से संकलित उपदेश कह रहा हूँ।

इसमें सजीव एवं आत्मा के बीच संबंध का विवेचन किया गया है।

पद्यकार ऋषि का कहना है, कि जिस प्रकार प्रवाहित नदियाँ समुद्र का आकार ग्रहण कर लेती है।

उसी प्रकार विद्वान ईश्वर के दिव्य प्रकाश में मिलकर जीव योनि से मुक्त हो जाता है। तात्पर्य यह है, कि नदियां की भांति जीव जब सांसारिक माया मोह को त्याग कर प्रभु के दिव्य लोक से आलोकित होता है तब जीव रूप से मुक्ति पाकर सत्य रूप धारण कर लेता है।

गीता के ग्यारहवें अध्याय में अर्जुन ने श्री कृष्ण से कहा था कि हे केशव ! जिस प्रकार नदियों का जल समुद्र में मिलते ही विलीन हो जाता है,उसी प्रकार वीर आप के मुख्य में प्रवेश करते हुए विलीन हो जाते हैं। जीव तभी तक मायाजाल में लिपटा हुआ रहता है जब तक उसे आत्मज्ञान नहीं होता है।

आत्मज्ञान होते ही जीव योनि से मुक्ति पा जाता है।

कहा गया है।

यथा नद्यः स्यन्द्मानः समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरुपे विहाय।

तथा विद्वान् नामरूपाद् विमुक्तः परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम।।